* श्री; *

* वैराग शतक *

डाक्टर रमाकान्त मुञ्जूमदार नैपाली परिशोधित

जिसे

सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द

मुम्बई

बुकसेलर अयोध्या जिला फैजाबाद ने

छपवाकर प्रकाशित किया.

CAWNPORE.
DIAMOND JUBILEE-PRESS,
1898.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

* श्रीमन्मारुतनंदनायनमः *

॥ बैराग सतक ॥

* दोहा *

बंदि लषन पद सर्ब गुरु, कहौं बिमल बैराग।
तजित्रिनघरधनमातुपितु, रामचरनअनुराग॥
गुरूबैद भेषज बचन, संजम बिषै बिराग।
नामसुधासम तुष्टजिय, रामचरनतब जाग॥१॥
बिरतिसतकदृष्टांत लखि, रामचरनधरिधीर।
जगत तून बिद्याधनुष, तजे लगे मनतीर॥३॥
रबिबिरागअज्ञानतम,बिरतिअगिनिबनिराग।
रामचरनजगतजेबिनु, रामचरनकिमिलाग४॥

हमहमगवि करजलजलधि, तृष्णा उठहिं तरंग।
रामचरनतजि गंगजिय, भ्रमिमनमरतकुरंग ५
हेतुसरूपजुफल अवधि, विरतिभूमिका चारि।
रामचरनगहि चौथपद, तबतोहिपरेनिहारि ६॥
हेतुविषयविषते अधिक, रामचरनअसभासि।
लखुविषमारतवारयक, विषयलाखचौरासि॥७॥
रीधीसीधी प्राप्तितिहुँ, भयेसोस्वरूपकरुत्याग।
रामचरन अहिसिंहते, खेलतकौन सुहाग॥८॥
फलनिधिसिधितेजीवमन ज्योंपुनिवासनानहोइ।
रामचरन ज्योंसत्य मन, नेहगेह सबखोइ॥९॥
मनुजनागसुरलोकसम, विषयअवधिसबबादि।
रामचरन त्रय शृंखला, लोह कांसकनकादि॥
चारिचरन वैराग्यके, हो जितमान निहारि।
धरुवितरेकयेकेहगहु, वसीकारबिसिचारि ११॥

सारासार बिचारि गहु, यथाहंस पयनीर।
रामचरनजितमान हो,सकल देखुरघुबीर॥१२॥
कामक्रोध लोभादि षट, शत्रुसंग नहिंनीक।
रामचरन बितरेकधरु, चंदराहु सँगफीक१३॥
यकइंद्रियमन बिषय चलु, रोक बिरोधीमानि।
सुतसेवकप्रतिकूल कृत, साहेबकेसिरकानि१४
बसीकार मनइंद्रिय बासि, यहिजगतेकाकाज।
रामचरण बैरी मरै, तब निष्कंटक राज॥१५॥
राम चरन बैराग्य के, कृपा चारि यक मन्द।
तीव्रतीव्रतरतीव्रतम, गहे कटतजमफंद १६॥
मृतक देखिधनछीनभो. गृह लोगनदेत्याग।
रामचरननिजमानिधृग,बिषइनमन्दबिराग१७
तीव्रमुमुक्षू हंस जिमि. नीत्या नीति बिचारि।
रामचरनपयनीति गहि.तजिअनीतजगबारि॥

मुक्तितीव्र तरसर्व तजि, एक मुक्ति मन सूरि ।
रामचरनगहिस्वाति जल. अपरपपीहहिंधूरि ॥
मुक्तितीव्रतम चौथ पद. चारिपदारथ त्याग ।
रामचरनजलमीनाजिय. पराभक्तिअतिराग २०
चारि सुपद वैराग्यते. होत चारि अनुबंध ।
रामचरनसोदेखिधरु. जहँ अनुबन्धनबन्ध २१
अधिकारीसनबंधपुनि. विषय प्रयोजनसार ।
रामचरनजगचारि तजि. चारिभावभवपार२२
अधिकारी अष्टांगते. विरति बिबेक निधान ।
समदम उपर तितीक्षणा.श्रद्धाअरुसमधान २३
जीवईस संबन्ध रचि, रामचरन गुरआदि ।
पितुप्रभुमित्र सुस्वामिसम,जगतनेहसबबादि॥
विषय रामसब शास्त्रके. आत्मा विषय शरीर।
रामचरन जिमिफूलफल. विषयगन्धरसधीर॥

रामचरन जिय रामको, भजनप्रयोजनसार।
रामचंद्र मुखचन्दछबि. चित्तचकोर कुमारि॥
भक्तिमुरी संजम बिराति. सम अनुपान अभेद।
रामचरन त्रियग्रहननहिंकहोकहेगुरवैद॥२७
असनपान मैथुनसयन, नरपशु असुरसमान।
रामचरन इन्हतजेबिनु. पशुते अधिकबखान॥
बिनु बिराग सबसाधना. निरसुदेखुयहलीक।
रामचरन बिनु रामरस. साधनव्यञ्जन फीक॥
रामचरणसदअसद को. पशुकोदम्भन ज्ञान।
जानि२नरकरतसठ.तातेअधिकअजान॥३०॥
तेरे संग आयो कवन. को तेरे संग जाइ।
आदिअन्तजियसमुझिले. रामचरनमनलाइ॥
कौन त्यागका ग्रहनहै. त्याग ग्रहन ते आन॥
त्याग ग्रहन मिलि कवनहै. रामचरन पहिचान॥

षटत्यागे षट ग्रहन करि, षट खटेपर एक ।
ग्रहन त्यागमिलिज्ञानहै, रामचरनदृढ़टेक ३३
दसा देखु संसारकी, दसान त्यागी जाइ ।
रामचरन दसदिसिदसा,दसादसीमुखखाइ३३
नित्यकहौतौहै नहीं. कहिअनित्यनाहिं जाइ ।
मोक्षबद्ध देखिप्रगट,रामचरन कहिकाहि॥३५॥
तृष्णासांपिनिजगडस्यो. दुखसुखलहरिसभूरि।
राममन्त्र गुरगारुडि, रामचरनदृढ़ भूरि॥३६॥
बालक कर्म सुधर्म है, तृष्णा डाइनि खाइ ।
रामचरन गुरतोषते,बांधत किंतुजराइ ॥३७॥
चाहचमा रिन चूहड़ी, सूकरि कूकरि जानि ।
रामचरनमेचाहकरु,चाहत्यागदुखजानि॥३८॥
चाहचतुरता सबहरे; चढ़ी पिसाचिनि माथ ।
रामचरननहँकुशल किमि. हैनीचको साथ ३९

आसफांस मे फसिरह्यो. जीवकुरँगअकुलाइ ।
बचेआसकटि तजिभजै.रामचरनबनजाई४०॥
दास भये ते जगतके. जिन्है जगतकीआस ।
रामचरनजिनआसतजि.सकलजगततेहिदास
जीवमर्कट रजुबासना. नट मन ताहि नचाव ।
हिरिफिरिचौरासीनचत. रामचरनबिनुभाव४२
ाजिय पतंग गुनबासना. खेलवारी मनबाल ।
चारिखानि नभकेउड़त. रामचरनबिनुहाल४३
नेहकीचजल मीनजीव. फसेउसबेगति दूरि ।
रामचरन प्रेमोंबुबढ. निकसिलहै सुखभूरि४४
जगत रागलासाग्रगट. जियबिहंग मनबांधु ।
रामचरन धरमात्मा. मिलैछोड़ावैसाधु ॥४५॥
यह संसार असार है. ज्यों सेमर के फूल ।
जियशुकसेवतअग्र दुख. रामचरनप्रातिकूल ॥

आसानदी मनोर्थजल. ममताल्हरि कुभाव ।
कामग्राहगुरकरनधर. रामचरन दृढ़नाव॥४७॥
ज्यौं सुगंध है फूलमे त्यों जगमे तवरूप ।
रामचरनबुधि जतनते.करिलेअतरअनूप ४८॥
जथाछीर मे घृतामिलेउ. त्योंजगमे तव रूप ।
रामचरन बुधिते कढ़े. फिरिनाहिं मिलैअनूप ॥
बुधिआत्मतजिबिषयगहि ज्योंबिभिचारिननारि
रामचरनपतिते बिमुख. परपतिरतिजमधारि॥
यह मनसूकर स्वानसम.बिषयहेतु नितधाव ।
कबहुनतोषे उदरभरि. रामचरन बिनभाव५१
गजकपित्थजगकेदलित. तरुफलदारुनिमानु ।
देखतनीको सारबिन. रामचरनदृढ़जानु॥५२॥
रंक नृपौहित अन्यपट, परारब्ध सो देतु ।
प्रभुमहलखिसंतोषधरु, रामचरनकरुहेतु ५३॥

स्वासतीरतनतरकसधनु, गुनमुखनासिकचाल
रामचरनबिनुरामगत, चुकतहततारिसुकाल ॥
उदयअस्तबिस्वासतिमि, इमिक्रमक्रमतनजात
रामचरनतरु सुमनफल, पकतकालतवखात॥
कालखात प्रतिस्वासाजीमि, घरीघरीघरिआर।
रामचरन बसुजामगत, गजखजोतनद्वार५६॥
स्वासस्वास प्रतिरामजपु, निकटनआवै काल।
रामचरनजेअचुकसर, तेहिरिपुभक्तबेहाल५७॥
कर्मपींजरा ब्याधमन, जीवविहंग फँदाइ।
नामचोचतेकाटिकटि, रामचरन उड़िआइ५८
त्रैगुन कर्म कुपंथाजिय, निासिगिरिसिंहकिशोर।
निजस्वरूपलखिकूदिकाढ़, रामचरनबरजोर॥
कर्मकीचजिवजगफस्यो, गुरुगजगजाहिनिकारि
रामचरननादसुधाधासि, अमललस्योसुखसार॥

तननेहीघन दामिनी, भूतअग्नि धनधाम ।
बाजीगरको खेलजग, रामचरन भजुराम ६१॥
ससाजीव मनस्वानहै, कालसिकारी चाह ।
रामचरनतन साथरी, तिनसँगकवनिबाह ॥
पंचचोरखटाढिगतनाहिं, जीवसाहधन ज्ञान ।
लुटवमारवतकहीगांव, रामचरनरक्षध्यान६३॥
इंद्रिनतोष कपाटदै, बिरतिशास्त्रधरि जागु ।
मारिबंदिअरिदेशतन, रामचरनदृढ़लागु ६४॥
कज्जलघर ब्योहारजग, पैठिनिकारिव लाग ।
सतसंगातिते अमलभौ, रामचरनअनुराग ६५
निजस्वरूपलखु जीवनृप, मनकरकहानलाउ ।
सचिवकामी राजगत, रामचरनाकिनपाउ ६६॥
चढ़उअहंममद्वन्दज्वर, मानकुपंथ मनदेइ ।
जीवजीयतब अमरहोइ, रामचरनरतिलेइ ६७

इन्द्रजाल व्यवहारजग, लखैसांच सबझूठ।
रामचरनरतिते लखाहिं, पंचभूतके कूठ ॥६८॥
जगदुखसुख जिमिस्वप्नमें, भयउकोइनृपरंक।
रामचरनरतिजगाविरति, जागतसंकानिसंकद्द
जगतरूप तबरूपनाहिं, राम रूप तव रूप।
रामचरन रविरूपघट, रूपीरूप अनूप ॥७०॥
जिवभूल्योनिजअज्ञते, इन्द्रियकृतनिजकाज।
रामचरननृपबाललहि, करहिटहलुवाराज७१॥
जीयहरिसिसु इन्द्रिय, तिनसँगभूलि सरूप।
रामचरनगुरद्वितियहरि, मिलिआवानिजरूप॥
सुमनगांधि मध्यघृत, तिमिजगतोर स्वरूप।
रामचरनगुरजत्नकरि, कियोअत्रघृतरूप॥७३॥
जिमिपदार्थ मेस्वादहै, स्वादहिते सबकाम।
तिमिजगरूप अनूपतव, रामचरनअभिराम॥

संपुटवर्णाश्रम अहम, विचजीवरत्न अमोल ।
सतगुरगाहकपारखी, रामचरनबुधिखोल ॥७५
अहंकारगिरि रत्नजिय, सुमतिखोदिकरिकाढ़ि।
भक्तिसुतियशृंगारकरि, रामचरनछविबाढ़ि७६
मृगतृष्णाजराजल निरखि, मनसंगाजियधाय ।
तृषा मिटीनाहिं मिटैतब, रामचरनअसपाइ७७
दसकुतियामनमँगलिहे, जियबनविषमभुलान।
निजानिजादिसिचोथतसकल, रामचरनबिनुज्ञान
मनमालिक जियबस्तुदै, गांहक इन्द्रिन लीन ।
जिमि२बोलहिंजरन्हलइ, रामचरननिजकीन ॥
निजनिजस्वारथ मीतसब, तोरोहितुनहिकोइ ।
रामचरननिजरूपलखु, बनिक बेलजनिहोइ ॥
सातआवरण द्वारदस, चौदहरज्ज पचीस ।
तिन्हजियधरिलियकालजिमिरामचरनदुइबीस

मनचाहतहै विषयको, जीवचहत है राम।
रामचरन घरबैरते, सरेउकवन कोकाम ॥८२॥
कामक्रोधलोभादिभट, प्रकृतिकटक बहुक्रूर।
बिरतिज्ञानते जीतितेहि, रामचरनमोसूर ८३॥
यकसाधनते सिद्धिसब, रामरूप जगदेखि।
चिंतामनितेका अगम, रामचरनसबसेखि८४॥
जीवसर्पके चिलविषय, अन्धाफिरत अज्ञान।
तेहितजिनिरमलभवंविरति, रामचरनधरिध्यान
बिषयजालजिवचखपरेउ, सतअरुअसतनदेखि
बिरतिसलाका काढ़िगुरु. रामचरन तबपेखि ॥
बिनाबिराग जगफुरफरत, मोदकढतअहिचित्र।
सिंहदारुजीमिभृतधन, रामचरनलखुमित्र ८७
रामचरननिजबोधनाहिं, नहिंबीना जगजाल।
कर्मधर्मव्योहारसब, जथाभालको ख्याल ८८॥

मोहमनोरथ सुमननभ, ससाशंग सुतबांझ ।
रामचरन यहमानिफुर, दिनबीतेउभइसांझ ॥
जाति रूपाविद्यासधन, कविगुनसो भयदेहि ।
निर्भयएक बिरागहै, रामचरनगहितेहि ॥९०॥
मोहनीर जिवमीनहै, रागजाल लिय काल ।
रामचरननिधिसुधामगु, धरिविराग बचुजाल॥
तियरसनासुखधनविभव, मनस बिषमदभूत ।
चारिहुतेबैरागकरु, रामचरन सुखसूत ॥९२॥
कालखातप्रतिस्वासतोहि, जथासूर्य रससोखु ।
तृनतरुअंकुरबाढ़िनसत, रामचरनलखितोखु॥
कालबाजीगरस्याल जग, खेलसमेटत रोर ।
स्यालभूठलखुबिरातिते, रामचरनफुरतोर ९४॥
विषयरोग भेषजभगति, संजमशुद्ध बिराग ।
रामचरनगुरु ज्ञानदै, अनूपानपथलाग ॥९५॥

चाहरोग विषयाकुपथ. बैदकृपा तव श्याम ।
देनकहेउसोकरहुफुर, रामचरन तवराम॥९६॥
मांगिमधुकरी खातजो. श्रीसरजू जलपान ।
रामचरनमेंअवधबसु, तेहिसमधन्यनआन ९७
सकलविषयतजिसीठिजिमि. सरयूतटहरषाइ ।
बिचरोरामममदांधइव, रामचरनरसपाइ ॥९८॥
सांससीवी ज्ञानखट. काको लामो मांम ।
रामचरनहितपूर्वखट, परीयुतजुलखीबाम९९
बदनतूनममजीभधनुष. सतकबानगहिज्ञान ।
रामचरनपढ़िसमुझिदल. जीतिमोहअज्ञान ॥
सर्पनसदन बनाइकै. सिंहगनगाठी बांधु ।
मधुपसुमनसतसंगरस. रामचरनतामिसाधु ॥
जगतेप्रथमविरागकरु. दुसरेतन सुख त्याग ।
तीसरअन्तरत्यागकरु, रामचरनतवलागु१०२

इतिश्रीदृष्टांतसतक बोधिकावैराग्यसतक
॥ वरणननाम द्वितीयसतकसमाप्तम् ॥